पंजाब खेल जगत में महिलाओं की भागीदारी और जीवन संघर्ष
एक विश्लेषणात्मक अध्ययन- (विशेष संदर्भ कबड्डी खेल)

Life Struggle and Women Participation in Punjab sports
An analytical study (Special reference in kabaddi sports)

एम. फिल.

लघु शोध प्रबंध

सत्र- 2015-16

मार्गदर्शक

प्रो. शंभु गुप्त

स्त्री अध्ययन विभाग

शोधार्थी

जितेन्द्र कुमार

पंजी. सं.-2015/03/212/015

स्त्री अध्ययन विभाग, संस्कृति विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा – 442001 (महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमणिका

अध्याय-1 **पृष्ट-संख्या**

1.1 भूमिका **1-9**

1.2 साहित्यिक पुनरावलोकन

1.3 शोध प्रश्न

1.4 शोध उद्देश्य

1.5 शोध क्षेत्र

1.6 शोध प्रविधि

1.7 समय और सीमा

अध्याय- 2 **10-24**

पंजाब में कबड्डी खेल का इतिहास

2.2 कबड्डी खेल का इतिहास एवं औपचारिक प्रारम्भ

2.3 कबड्डी खेल का स्वदेशी रूप

2.4 कबड्डी खेल का वैश्विक प्रारूप

2.5 पंजाब में कबड्डी खेल का वैश्विक प्रारूप

2.6 कबड्डी खेल के नियम

2.7 प्रो-कबड्डी क्या है? यह कब शुरू हुआ? विदेशों में इसकी क्या स्थिति है?

निष्कर्ष

अध्याय- 3 **25-41**

कबड्डी खेल में महिलाओं की सहभागिता एवं जीवन संघर्ष-(साक्षत्कारों पर आधारित)

3.1 सहभागिता:

3.1.1 ग्रामीण स्तर पर

3.1.2 शहरी स्तर पर

3.2 जीवन संघर्ष (लिए गये साक्षात्कारों पर आधारित)

3.2.2 परिवार

3.2.2 समाज

3.2.3 धर्म

3.2.4 जाति

3.2.5 खान-पान

अध्याय- 4 **42-48**

खेल जगत में पुरुष वर्चस्व की राजनीति और कबड्डी की स्थिति

4.1 वर्तमान खेलों में पुरुष वर्चस्व और खेलों की वर्तमान स्थिति

4.2 कबड्डी खेल की स्थि

4.3 नशाखोरी से जूझता पंजाब

4.4 कबड्डी खेल में स्त्री की स्थिति

4.4.1 कबड्डी में पंजाब स्तर पर प्रसिद्द महिलाएँ

4.4.2 कबड्डी में विश्व स्तर पर प्रसिद्ध भारतीय महिलाएँ

अध्याय- 5 **49-60**

पंजाब में कबड्डी खेल का विकास एवं सरकारी नीतियाँ

5.1 राज्य की नीतियाँ

5.2 राज्य की नीतियों का जेंडरगत अध्ययन

अध्याय- 6 **61-64**

निष्कर्ष

परिशिष्ट:-

1 साक्षात्कार

2. गतिविधियों की सूचनाएँ-चित्र इत्यादि

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय- 1

1.1भूमिका
1.2 साहित्यिक पुनरावलोकन
1.3 शोध प्रश्न
1.4 शोध उद्देश्य
1.5 शोध क्षेत्र
1.6 शोध प्रविधि
1.7 समय और सीमा

भूमिका

शोध विषय खेल पर आधारित है, तो सबसे पहले यह जानना आवश्यक है, कि खेल क्या है? और इसकी उत्पत्ति कैसे हुई? खेल कई नियमों एवं रिवाजों द्वारा संचालित होने वाली एक प्रतियोगी गतिविधि है। खेल सामान्य अर्थ में उन गतिविधियों को कहा जाता है, जहाँ प्रतियोगी की शारीरिक क्षमता खेल के परिणाम जीत या हार का एकमात्र अथवा प्राथमिक निर्धारक होती है, लेकिन यह शब्द दिमागी खेल (कुछ कार्ड खेलों और बोर्ड खेलों का सामान्य नाम, जिनमें भाग्य का तत्व बहुत थोड़ा या नहीं के बराबर होता है) और मशीनी खेल जैसी गतिविधियों के लिए भी प्रयोग किया जाता है। जिसमें मानसिक तीक्षणता एवं उपकरण संबंधी गुणवत्ता बड़े तत्व होते हैं। सामान्यत: खेल को एक संगठित प्रतिस्पर्धात्मक और प्रशिक्षित शारीरिक गतिविधि के रूप में परिभाषित किया गया है। जिसमें प्रतिबद्धता तथा निष्पक्षता होती है।

खेल अक्सर केवल मनोरंजन या इसके पीछे आम तौर पर जो छिपे हुए तथ्य को उजागर करता है कि लोगों को शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए व्यायाम करने की आवश्यकता है। हालांकि वे हमेशा सफल नहीं होते है। खेल प्रतियोगियों से खेल भावना का प्रदर्शन करने और विरोधियों एवं अधिकारियों को सम्मान देने व हारने पर विजेता को बधाई देने जैसे व्यवहार के मानदंड के पालन की उम्मीद की जाती है।

खेल की उत्पत्ति:- "खेल" ("स्पोर्ट") शब्द की पुराने फ्रेंच शब्द *देस्पोर्ट (desport)* से उत्पत्ति हुई है, जिसका अर्थ "अवकाश" है।[1]

खेल महिलाओं को सशक्त करने का काम करता है लेकिन इस पूरे स्वरूप को झुठलाते हुए खेल का स्वभाव पूरे विश्व में भेदभाव पर आधारित रहा है। दुनिया के लगभग सभी देशों में खेलों पर प्रमुख रूप से वर्चश्व पुरुष समाज का है। जिसे प्रथम स्थान पर रखा जाता है और जिसके बारे में कहा जाता है कि पुरुष वर्ग शारीरिक रूप से बहुत मजबूत और मानसिक रूप से तार्किक होता है । क्योंकि खेलों में बहुत ताकत की जरूरत होती है जो सिर्फ पुरुषों के पास होती है और महिलाओं को दूसरे स्थान पर रखा जाता है। इसके बारे में पारंपरिक रूप से यह कहा जाता रहा है कि वह पुरुषों की भांति दौड़ नही सकती, सोच नही सकती,महत्वपूर्ण फैसले नही ले सकती, शारीरिक व मानसिक रूप से पुरुषों के मुकाबले कमजोर होती है। इसीलिए लड़कियों को कमजोर, नाजुक, खूबसूरती के कटघरे में रखा गया है और कहा जाता है

[1]https:\\hi.wikipedia .org\wiki\खेल

कि लड़कियां खेल नही सकती। जिसका कारण है कि हमारा समाजीकरण ही कुछ ऐसे रुढ़िवादी तरीके से होता है। बचपन से ही लड़के-लड़कियाँ साथ–साथ खेलते-खेलते कब एक दूसरे से अलग खेलने लगते है और कब लड़कियां गलियों और मैदानों में खेलने पर मजबूर हो जाती है। यह भेद आसानी से बच्चों के समझ में नही आता है और जब समझ में आता है तो विद्रोह की भावना उभरती है। तब तक लड़कियों को समाज में स्थापितनैतिकता, परम्परा, प्रतिष्ठा के बंधनों में बांध दिया जाता है। यह पूरी प्रतिक्रिया एक सोची समझी सामाजिक सरंचना के तहत होती है। जहाँ लड़कों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में श्रेष्ठ समझा जाता है। लेकिन इसी के चलते आज तक महिलाओं ने खेल में जो भी मुकाम हासिल किया है वह लंबे संघर्ष की दासता बयां करता है। यह संघर्ष बहुत सारी रुढ़ीवादी सामाजिक रुकावटों से भरा है। लेकिन फिर भी खेलों में महिलाओं ने अपनी जगह बनाई है चाहे विद्रोह से या आसानी से बनाई लेकिन लड़कियों ने संघर्ष करते हुए खेलों के अन्तर्गत इतिहास रचा है।

वर्तमान समय में विभिन्न खेलों का स्वरूप बदल रहा है। आज लगभग सभी खेलों में लड़कियों की भी प्रतिभागिता रहती है बावजूद इसके बहुत सारी सामाजिक रूढ़ियों के कारण अनेक खेलों में उचित स्थान नहीं बना पा रही हैं। फिर भी अनेक संघर्षों के बाद लड़कियाँ खेल क्षेत्र में आ रही हैं परन्तु सामाजिक जिम्मेदारियों और जेंडर के गढ़न की प्रक्रिया के कारण खेलों को आज भी लड़कियों के करियर के रूप में नहीं देखा जाता और न ही खेल को उनके जीवन का मुख्या हिस्सा माना जाता है। इन सभी प्रकार के भेदभाव और संघर्षों से निकल कर कुछ महिलाओं नें खेल जगत में अपना परचम लहराया है। इन रुढ़िवादी धारणाओं को तोड़कर बहुत सारी लड़कियाँ खेलों में अपना मजबूत स्थान बना रही है। सभी खेलों के विषय में बात न करते हुए हम यहाँ पर कबड्डी खेल के अंतर्गत महिलाएँ किस तरह से आगे आ रही हैं या किस तरह का प्रभाव उनके जीवन पर रहा और किस प्रकार के जीवन अनुभव रहे हैं इन सभी के द्वारा इस खेल में महिलाओं की क्या स्थिति है, को प्रमुखता से उजागर करना चाहते है। वह उस धारणा को तोड़ रही है जिसमें कहा जाता है कि लड़कियाँ नाजुक, खूबसूरत और आकर्षित होती है, जो घरों में ही अच्छी लगती हैं। महिलाओं के इसी तरह के संघर्षो तथा खेलों में लड़कियों के अच्छे प्रदर्शन पर रोशनी डालने के लिए मैंने इस विषय का चयन किया है जिसके माध्यम से यह ज्ञात होगा कि जो महिलाएँ खेलों में प्रवेश पा जाती हैं उनके जीवन का संघर्ष क्या रहा है?

2.साहित्यिक पुनरावलोकन:- इस शोध विषय से संबंधित पुस्तकें या अध्ययन सामग्री का आभाव रहा है जितनी भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध हो पायी है उसके आधार पर शोध विषय का अध्ययन किया गया

है। खेल संबंधी सामग्री साहित्य,अखबार,पुस्तकालय अध्ययन, फील्ड वर्क, मैगजीन, जेस्टोर आदि का गहन अध्ययन किया गया है। क्योंकि यह शोध विषय खेल जगत में महिलाओं की भागीदारी एंव जीवन संघर्ष से है। इस शोध विषय के अंतर्गत साहित्यिक पुनरावलोकन के तहत निम्नलिखित पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं बहुत हद तक इस शोध विषय की गहराई तक पहुँचने में काफी सहायक रही है जिसे यहाँ पर दर्शाने का प्रयास किया है।

इस पुस्तक में महिला धावक के बारे में विस्तार से समझाने का प्रयास किया गया है। पहली अमरीकी स्त्री धावक जो 1959 मे जो लैप की अतिरिक्त लम्बाई से दोगुना भागी थी। वह अमबी बुरफूट 1984 मे ओलंपिक मे पहली महिला मैराथन हुई। इस परिवर्तन को होने मे 25 साल का समय लग गया। जिसके पीछे कई छोटे बड़े कारण थे इस क्रांति को देखने के लिए कई दृष्टिकोण हो सकते है। जिसमें इससे संबन्धित चर्चित कथाओं का योगदान तो है। साथ ही बताए गए व्यक्तिगत इतिहासों का महत्वपूर्ण स्थान है। अमबी बुरफुट दौड़ की दुनिया की सर्वश्रेष्ठ लेखिका थी वहीं वह पहली महिला भी थी जो बोस्टन मैराथन में विजयी हुई थी। 1950 का दशक वह समय था जब महिलाओं को कोमल एवं संवेदनशील प्रवृति का माना जाता था और यह मिथक था की वह लंबी दौड़ों में या खेल जगत में प्रतिभागिता नहीं दे सकती, यहाँ तक की उसे पसीने की बू से महकते देखना समाज को स्वीकार नहीं था। वह केवल गृहस्थ कार्यों में लिप्त रहे यही उसका परम दायित्व माना जाता था किन्तु लंबे समय तक अपनी इस अवस्था पर चिंतन मनन के पश्चात स्त्री के मन में यह प्रश्न उठा 'आखिर मैं क्यों नहीं?' और इसके पश्चात ही खेल जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। 1968 में बोस्टन मैराथन जीतने वाली प्रथम महिला बुरफुट ने लगभग सक्षिप्त 22 साक्षात्कार लिए जिसमें उन्होने दर्शाया कि कैसे वह परिवर्तन लायी। साक्षात्कारों से बहुत सी बातें उभरकर सामने आती है जिसमे पुरुष प्रधान समाज के विरोध को भी दर्शाया गया है। यदि पुरुष समाज में इस परिवर्तन का खंडन किया तो दूसरी ओर पुरुषों का एक ऐसा वर्ग भी था जो स्वतंत्र रूप से इसका समर्थन भी करता था। कि किस प्रकार पुरुष प्रधान समाज खेल में भी दबाने कि कोशिश करता है।[2]

इस पुस्तक में कबड्डी खेल के नियम को विस्तार से समझाने का प्रयास किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय नियमों के तहत खेली जाने वाली कबड्डी को वो सारे देश मानते हैं जो लगातार इस खेल से जुड़े हैं। कबड्डी के बहुत सारे भारतीय स्टाइल भी हैं क्योंकि इसकी शुरुआत 1000 साल पहले प्राचीन

---

[2]**BurfootAmby(2016).** ***First Ladies of Running.*****London: RodaleBooks.**

भारत में ही हुई थी। देश के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग नियमों का पालन किया जाता है। जैसे खेल के अंतर्राष्ट्रीय प्रारूप में दो टीमों के सात खिलाड़ी जीतने के लिए आपस में भिड़ते हैं और जिसके भी ज्यादा अंक होते हैं वो विजयी होता है। पुरुषों के मैच में फील्ड का आकर 10x13 m होता है तो वहीं महिलाओं के लिए ये 8x12 m होता है। हर टीम के पास तीन रिजर्व खिलाड़ी होते हैं जिनका इस्तेमाल परिस्थिति के हिसाब से किया जाता है। खेल का हरेक हाफ 20 मिनट का होता है और हाफ टाइम के 5 मिनट के ब्रेक के बाद टीमें अपनी अपनी साइड बदल लेती है। हरेक टीम अपना रेडर दूसरे टीम के हाफ में भेजती है और पॉइंट जीतने के लिए उस रेडर को अपने सांस को थामकर रखते हुये विरोधी टीम के अधिक से अधिक खिलाड़ियों को छूना होता है और फिर बिना सांस लिए अपने हाफ में आना होता है। रेडर को रेड के दौरान 'कबड्डी कबड्डी' बोलना होता है जिससे कि रेफरी को लगे कि वो एक ही सांस में ये कर रहा है। रेडर अगर सांस बहार छोड़ता है या अपने हाफ में आने में असफल रहता है तो उसे बाहर कर दिया जाता है। विरोध टीम के उन खिलाड़ियों को भी बाहर किया जाता है जो टैग होने के बाद उस रेडर को अपने हाफ में जाने से नहीं रोक पाते। उस डिफेंडरों का यही काम होता है कि वो किसी भी तरह से रेडर को पछाड़ सके। डिफेंडरों को सेंट्रल लाइन पार करने की अनुमति नहीं होती ठीक उसी तरह रेडर को बाउंड्री लाइन पार करने की अनुमति नही होती। हालाँकि एक बोनस लाइन भी होता है जिसे छूकर अगर रेडर अपने हाफ में लौट आता है तो उसे बोनस पॉइंट्स मिलते हैं। जिन खिलाड़ियों को रेफरी द्वारा बाहर किया जाता है वो कुछ देर मैच में नही होते। एक प्लेयर के आउट होने पर एक पॉइंट मिलता है और अगर पूरी टीम बाहर हो जाए तो दूसरी टीम को 3 बोनस पॉइंट मिलते हैं। खेल के अंत में जिस टीम के सबसे अधिक पॉइंट्स होते हैं वो विजयी होती है।[3]

इस पुस्तक में कबड्डी के इतिहास को समझाते हुये इसमें यह बताया गया है कबड्डी कैसे सीखी जाती है इसके क्या-क्या तरीके हो सकते है तथा सीखने के इतिहास को भी समझाया गया है जैसे - 1979 में पहली बार कोचिंग देने के लिए प्रोफेसर सुंदर राम को जापान भेजा गया था। उसके बाद 1986 में कोचिंग दल रूस भेजा गया। इसी तरह अमेरिका, वेस्टइंडीज, जर्मनी और कई अफ्रीकी देशों में भी भारतीय कोशिशों के चलते खिलाड़ियों ने न केवल कबड्डी का ककहरा सीखा, बल्कि टीमें बेहतर प्रदर्शन भी करने में लगी है। दरअसल खेल अधिकारियों की आपसी खींचतान और तालमेल का अभाव

[3]श्रीवास्तव सुरेंद्र (2013), *कबड्डी (संपूर्ण खेल नियम)*, भारत: शारदा प्राकाशन

भी कहीं न कहीं दोषी है लेकिन भारत ने जब पहला विश्व कप 2004 में मुंबई में कराया था, तब इसमें 16 देशों ने भाग लिया था। उसके बाद पिछले साल भी भारत ने विश्व कप का आयोजन किया तब 18 देश शरीक हुए थे। इसी मकसद को पूरा करने के लिए पूरे विश्व को कबड्डी सिखाने के लिए भारत की ओर से कम कोशिश नहीं हो रही।[4]

इस पुस्तक में विश्व कप टूर्नामेंट में खेले गए मैचों, उनके आंकड़ों और अन्य रोचक पहलुओं की जानकारी दी गई है। उपमुख्यमंत्री ने डॉ॰ चहल को उनकी छठी पुस्तक के लिए बधाई देते हुए कहा कि कबड्डी का खेल अपने सुनहरे दौर से गुजर रहा है और यह इसे अपनी लेखनी का विषय बनाने के लिए यह एक बेहद शानदार मौका है। पुस्तक कबड्डी की बल्ले-बल्ले आगामी पीढ़ियों को यह बताने में मददगार साबित होगी कि यह खेल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कैसे पहुंचा। इस अवसर पर पूर्व हॉकी ओलंपियन परगट सिंह ने कहा कि खेल और खिलाड़ियों के उत्थान में साहित्य का योगदान बेहद महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इससे खिलाड़ियों की उपलब्धि को सदियों तक याद रखने में मदद मिलती है।[5]

कबड्डी एक सामूहिक खेल है, जो प्रमुख रूप से भारत में खेला जाता है। कबड्डी नाम का प्रयोग प्राय: उत्तर भारत में किया जाता है, इस खेल को दक्षिण भारत में चेडुगुडु और पूरब में हु तू तू के नाम से भी जानते हैं। भारत के साथ पड़ोसी देशों में भी कबड्डी बड़े पैमाने पर खेली जाती है। विभिन्न क्षेत्रों में इसके अलग-अलग नाम हैं। पश्चिमी भारत में हु-तू-तू, पूर्वी भारत और बांग्लादेश में हा-दो -दो; दक्षिण भारत में चेडु-गुडु; श्रीलंका में गुड्डु और थाईलैंण्ड में थीचुब। यद्यपि यह खेल थोड़ी भिन्नता के साथ खेला जाता है, पर शत्रु क्षेत्र में आक्रमण का मूलतंत्र सभी में समान रहता है। इस खेल में एक खिलाड़ी विरोधी दल के पाले (क्षेत्र) में 'कबड्डी-कबड्डी' या 'हु-तू-तू' दोहराया जाता है, विरोधी दल के खिलाड़ियों को छूने के प्रयास में तेजी से घूमता है और वापस अपने पाले (क्षेत्र) में आ जाता है; यह सभी एक ही सांस में और विरोधियों की गिरफ्त से बचकर होना चाहिए। इसके अलावा इसमें कबड्डी खेल के इतिहास, खेल के मैदान का माप, मैदान में उपस्थित खिलाड़ी के पोसाक, खेल के नियम, मैच के नियम, अधिकारी के निर्णायक, अधिकारी के अधिकार आदि को विस्तृत समझने का प्रयास किया गया है।[6]
इस वेबसाइट में कबड्डी का इतिहास एवं इससे जुड़ी कुछ खास बातें को बताया गया है, जैसे-

---

[4]मिश्रा डॉ. शरद चंद्र (2011). *कबड्डी सीखें*, भारत स्पोर्ट्स पब्लिकेशन

[5]सुखबीर सिंह, कबड्डी की बल्ले-बल्ले, संगम प्रकाशन

[6]**http://bharatdiscovery.org/india/-24/04/2016-12:36AM**

- कबड्डी प्राचीन महाभारत कालीन युग के लोकप्रिय खेलों में शामिल रहा है।
- कबड्डी शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सर्वसम्मत मत तो नहीं है, परन्तु अधिकांश लोगों के अनुसार कबड्डी तमिल शब्द 'काईपीडी' का परिवर्तित नाम है।
- कबड्डी भारत के राज्यों तमिलनाडु, महाराष्ट्र, बिहार, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और पंजाब का 'स्टेट गेम' है।
- वर्तमान में किसी भी खेल में विश्व में सर्वश्रेष्ठ टीम और प्रदर्शन की बात हो तो वो खेल कबड्डी ही है, जिसका हर विश्व कप, एशियन गेम्स का स्वर्ण पुरुष एवं महिला दोनों वर्गों में भारत के ही नाम है।
- दक्षिण एशिया के अहम खेलों में से एक कबड्डी की लोकप्रियता की वजह से ही इस पर बहुत सारी हिंदी फिल्में भी आधारित थीं, जिनमें परदेस, हु तू तू, कबड्डी तथा बदलापुर बॉयज इत्यादि शामिल हैं।
- जोश-ऊर्जा से लबरेज़ कबड्डी में दो टीमें होती हैं, जिनमें प्रत्येक में 7-7 खिलाड़ी होते हैं।
- कबड्डी खेल की कुल समयावधि 40 मिनट है, जिसमें अंतराल का 5 मिनट भी शामिल होता है।
- इस खेल का मुख्य नियम यही है, कि विरोधी खेमे में जाकर एक ही साँस में कबड्डी-कबड्डी बोलते हुए ताल ठोकना और दोनों टीमों के बीच खींची रेखा को छू लेना। इस दौरान विरोधी टीम ताल ठोकने वाले खिलाड़ी को पकड़ने में हर संभव दांव आजमाते हैं।
  आदि तथ्यों को समझने का प्रयास किया गया है।[7]

इस वेबसाइट में कबड्डी के इतिहास को बताया गया है, जैसे-कबड्डी की उत्पत्ति भारत के तमिलनाडु राज्य से मानी जाती है, जो यहाँ आदिकाल से ही प्रचलित रहा है। हालाँकि वर्तमान स्वरुप की कबड्डी का श्रेय महाराष्ट्र को है।

[7] **http://shabdanagari.in/post/26886/-ka-itihas-avam-isse-kuch-khac-baatein-8227314 21/04/2016 – 10:44 PM**

जहां 1915 से 1920 के बीच कबड्डी के नियमों की प्रक्रिया शुरू हुई। हालाँकि कबड्डी ने विश्व-स्तर पर अपनी पहचान भारत द्वारा बर्लिन ओलंपिक-1936 में सहभागिता से प्राप्त की। गौरतलब है, कि 1938 में तत्कालीन कलकत्ता में इंडियन नेशनल गेम्स में कबड्डी शामिल हुआ। 1950 में 'आल इंडिया कबड्डी फेडरेशन' (ए.आई.के.एफ.) बना जिसके तहत कबड्डी के औपचारिक नियम तय किये गए। हालाँकि 1972 में ए.आई.के.एफ. बाद में 'द अमेच्योर कबड्डी फेडरेशन ऑफ इंडिया' (ए.के.एफ.आई.) में बदल गया और चेन्नई में कबड्डी का पुरुष वर्ग का पहला टूर्नामेंट आयोजित हुआ। ज्ञातव्य है, कि पहला एशियन कबड्डी चैम्पियनशिप 1980 में हुआ जिसमें भारत ने बांग्लादेश (जिसका राष्ट्रीय खेल कबड्डी है) को हराकर विजेता बना। वहीं बीजिंग में 1970 के एशियन गेम्स में कबड्डी को शामिल हुआ था। इसके अलावा इस वैबसाइट में MODERN MILESTONES OF KABADDI को लिखा गया है, तथा INDIAN KABADDI'S INTERNATIONAL ROLL OF HONOUR को भी दिनांक सहित लिखा गया है।[8]

शोध प्रश्न:- शोध विषय से संबंधित जिस तरह की अध्ययन सामग्री उपलब्ध हुई, उसी के आधार पर निम्न शोध प्रश्न उभर कर सामने आयें है**,** जिसके आधार पर ही शोध समस्या को बारीकी से समझा जा सकता है-

1. राष्ट्रीय खेल नीति क्या है ?
2. कबड्डी खेल की शुरुआत कब हुई ?
3. कबड्डी खेल में महिलाओं की भागीदारी का स्तर और जीवन संघर्ष क्या है ?
4. कबड्डी खेल का राष्ट्रीय परिदृश्य क्या है
5. महिला खिलाड़ियों के प्रति सामाजिक रवैया कैसा है ?

शोध उद्देश्य:- कोई भी शोध कार्य हो तो वो किसी खास उद्देश्य से किया जाता है, जैसे इस शोध कार्य के भी निम्न उद्देश्य है-

1. कबड्डी खेल में महिलाओं की भागीदारी के स्तर का अध्ययन करना।

2. कबड्डी खेल में शामिल होने वाली महिलाओं के संघर्ष का अध्ययन करना।

[8]**http://www.prokabaddi.com/history-of-kabaddi 17/04/2016 -11:32**

3. कबड्डी खेल में राष्ट्रीय परिदृश्य का अध्ययन करना।

4. महिला खिलाड़ियों के साथ पुरुष खिलाड़ियों एंव कोच के व्यवहार का अध्ययन करना।

5. खेल के बाजारीकरण का अध्ययन करना।

6. महिला कबड्डी खेल में नई संभावनाओं की तलाश करना।

शोध क्षेत्र:- शोध का मुख्य केंद्र बिंदु पंजाब रहा है। पंजाब में कुल 22 जिले है। इसी संदर्भ में पंजाब के मोहाली, पटियाला, संगरूर जिले को आधार मानकर इस शोध कार्य को किया गया। इस शोध क्षेत्र के लिए मोहाली, पटियाला, संगरूर जिले का चयन इसलिए किया है, क्योंकि इन जिलों को पंजाब में खेल क्षेत्र का हब माना जाता है। जिन में से उद्देश्यपूर्ण चयन विधि द्वारा कबड्डी खिलाड़ियों का चयन किया गया, क्योंकि कबड्डी की पूरी रूपरेखा, दिशा वहीं से तैयार होती है, इसलिए इन क्षेत्रों से इनका अध्ययन किया गया और शोध विषय से संबंधित आंकड़े प्राप्त किये गये है। नीचे दिये गये नक्शे में लाल रंग की लकीरों से शोध क्षेत्र को दर्शाया गया है।

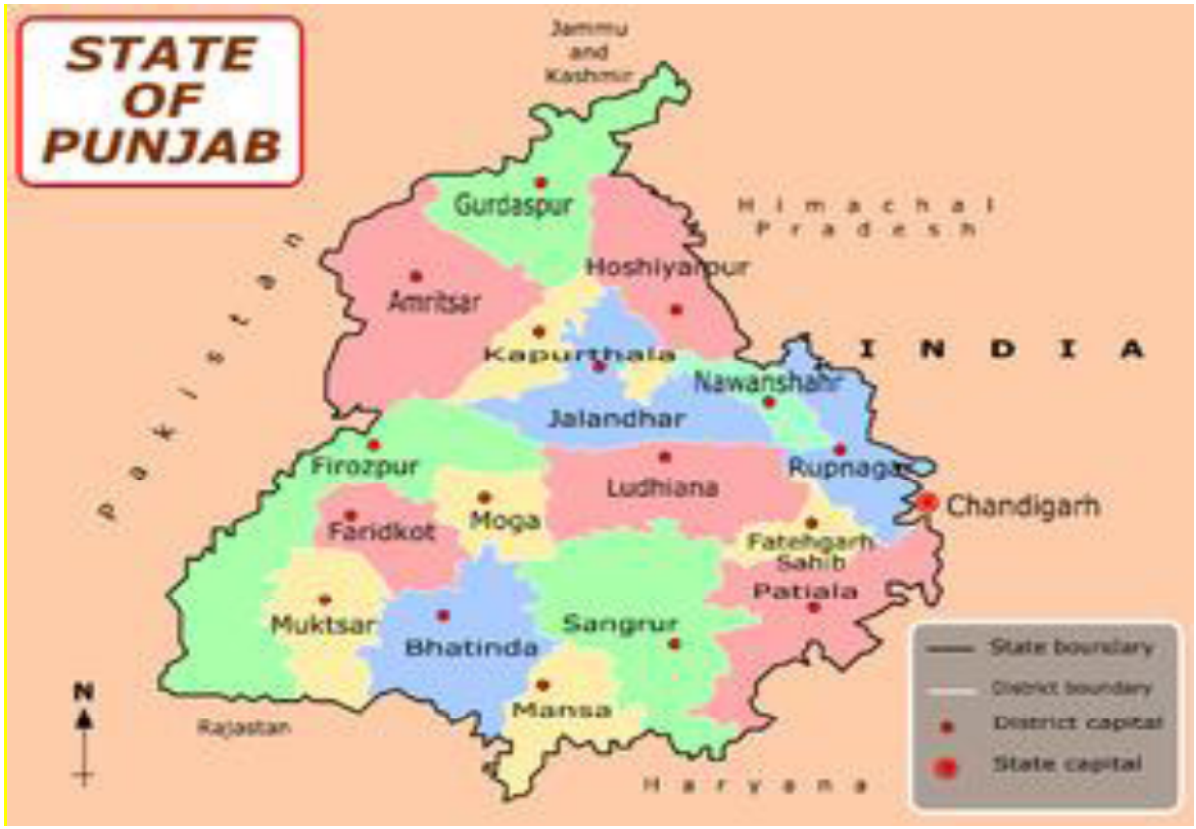

http://hindi.mapsofindia.com/punjab/

शोध प्रविधि:- शोध के अध्ययन हेतु नारीवादी प्रविधि का प्रयोग किया गया है, साथ ही विवरणात्मक संरचना अंतनिहित है। नारीवादी प्रविधि स्त्रीयों की हर क्षेत्र में समानता की हिमायती है।

विवरणात्मक प्रविधि:- यह शोध महिला कबड्डी खिलाड़ियों के जीवन संघर्ष के तथ्यों का संकलन कर विस्तृत वर्णन एवं यथार्थ चित्रण के उद्देश्य से किया गया अन्वेषण है।

साक्षात्कार अध्ययन विषय से संबंधित खुले प्रश्नों (open ended) की क्रमबद्ध सुव्यवस्थित सूची कराकर साक्षात्कार दाता से साक्षात्कार कर तथ्यों का संकलन किया है।

इस शोध में निदर्शन चयन के उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रविधि का प्रयोग किया है, जिसमें- 8 महिला खिलाड़ी, 4 पुरुष खिलाड़ी, 1 महिला कबड्डी कोच 1 पुरुष कबड्डी कोच, 1 खेल अधिकारी का प्रत्यक्ष साक्षात्कार लिया गया।

तथ्यों का विश्लेषण- विभिन्न विधियों के माध्यम से संकलित तथ्यों के विश्लेष्ण के लिए विश्लेषणात्मक विश्लेष्ण नारीवादी दृष्टिकोण प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

इस शोध कार्य में सूचना स्रोत- प्राथमिक और द्वितीयक दोनों ही प्रकार के आंकड़ों का संकलन किया गया है। प्राथमिक में साक्षात्कार, चित्र आदि द्वितीयक में शोध विषय से संबंधित अध्ययन सामग्री का प्रयोग किया गया है।

शोध समय और सीमा:- शोध कार्य की अपनी एक समय और सीमा होती हैं, तो एक निश्चित समय सीमा को ध्यान में रखते हुए ही इस शोध कार्य को किया गया है। इस शोध कार्य की पहली सीमा तो यही रही है, कि यह शोध चूंकि फिल्ड वर्क पर आधारित है, जिस कारण इस विषय में पूर्व में हुए शोध लगभग अपर्याप्त हैं। इसलिए इस शोध में सामग्री की कमी का सामना करना पड़ा। इस शोध में लिए जाने वाले साक्षात्कार शोध की सामग्री के लिए पर्याप्त हो तर्कसंगत नहीं है, इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है, क्योंकि उनमें भी सामाजिक बनावट और पितृसत्ता का प्रभाव आवश्यक रूप से दिखाई दिया है, इसमें कोई दो राय नहीं है।

परिशिष्ट:-

1 साक्षात्कार

2. गतिविधियों की सूचनाएँ-चित्र इत्यादि

संदर्भ ग्रन्थ सूची